आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :– कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:–प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2670 • उदयपुर, रविवार 17 अप्रैल, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

करनाल (हरियाणा) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 3 अप्रेल 2022 को मानव सेवा संघ, पुराना बस स्टेण्ड के पास, करनाल में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता पं. पूज्य मूर्ति जी महाराज–मानव सेवा संघ करनाले रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 165, कृत्रिम अंग माप 41, कैलिपर माप 31 की सेवा हुई तथा 23 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि पं. पूज्य स्वामी प्रेम मूर्ति जी (मानव सेवा संघ, करनाल), अध्यक्षता श्री नरेन्द्र जी सुखन एडवोकेट (अधिवक्ता, करनाल), विशिष्ट अतिथि श्री संजय जी बतरा (मानव सेवा संघ), आर.के.सक्सेना (समाज सेवी), श्री सतीश जी शर्मा (सेवा प्रेरक, करनाल), डॉ. विवेक जी गर्ग (संयोजक–कैथल ब्रांच) रहे। डॉ. राकेश जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. गौरव जी तिवारी (पी.एन.डो.), श्री नाथूसिंह जी (टेक्निीशियन व

प्रभारी) सहित शिविर टीम में श्री मुकेश जी त्रिपाठी (उप शिविर प्रभारी) श्री रामसिंह जी (हिसार, आश्रम प्रभारी), श्री बहादुर सिंह जी (सहायक) ने भी सेवायें दी।

अमृतसर (पंजाब) में नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 3 अप्रेल 2022 को सेंट सोल्जर कॉन्वेंट स्कूल जडियाला गुरू अमृतसर, (पंजाब) में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्रीमान डॉ. मंगल सिंह, श्रीमान प्रमोद जी रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 135, कृत्रिम अंग माप 10, कैलिपर माप 04 की सेवा हुई तथा 04 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री अजय जी गुप्ता (विधायक, अमृतसर), अध्यक्षता श्रीमान् प्रमोद जी भाटिया (स्पोर्ट्स क्लब चैयरमेन, अमृतसर), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् मगंलसिंह जी (प्रिंसिपल, समाजसेवी), श्रीमती वीना सिंह जी (समाजसेवी) रहे।

डॉ. सिद्धार्थ जी लाम्बा (ऑर्थोपेडिक सर्जन), श्री रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन. डो.), श्री भगवती जी (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री हरीश सिंह जी रावत (प्रचारक), श्री देवीलाल जी मीणा, श्री कपिल जी व्यास (सहायक) ने भी अमूल्य सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक 16-17 अप्रैल, 2022

• पंचायत समिति परिसर, श्रीकोलायत, बीकानेर
• शिव शक्ति हॉल, समस्त पाटीदार समाजवाडी सरदार चौक, मिनी बाजार, वराछा, सुरत, गुजरात

दिनांक 17 अप्रैल, 2022

• काली माता मन्दिर, धर्मशाला बस स्टेण्ड के पास, मलेरकोटला, पंजाब

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन,नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

स्नेह मिलन समारोह

दिनांक : 17 अप्रैल, 2022

स्थान

प्रसिडेंट हॉल, रेल्वे स्टेशन के सामने, जूनागढ़, गुजरात सांय 5.00 बजे
हरियाणा भवन, नारायण नगर, कुमारपारा, गुवाहाटी, आसाम, सांय 4.00 बजे
जामलीधाम, ठाकुर द्वारा गोशाल के पास, हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश, प्रातः 11.00 बजे

इसस्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन,नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

दिव्यांग भी कर सकते हैं बड़ा काम

आंकड़ों के लिहाज से भारत में करीब दो करोड़ लोग शरीर के किसी विशेष अंग से दिव्यांगता के शिकार हैं। दिव्यांगजनों को मानसिक सहयोग की जरूरत है। यदि समाज में सहयोग का वातावरण बने, लोग किसी दूसरे की शारीरिक कमजोरी का मजान उड़ाएं, तो आगे आने वाले दिनों में हमें सारात्मक परिणाम देखने को मिल सकते हैं। समाज के इस वर्ग को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराया जाये तो वे कोयला को हीरा भी बना सकते हैं।

समाज में उन्हें अपनत्व–भरा वातावरण मिले तो वे इतिहास रच देंगे और रचते आएं हैं। एक दिव्यांग की जिंदगी काफी दुःखों भरी होती है। घर–परिवार वाले अगर मानसिक सहयोग न दें, तो व्यक्ति अंदर से टूट जाता है।

वैसे तो दिव्यांगों के पक्ष में हमारे देश में दर्जन भर कानून बनाए गए हैं, यहां तक कि सरकारी नौकरियों में आरक्षण भी दिया गया है, परंतु ये सभी चीजें गौण हैं, जब तहम उनकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना बंद ना करें।

वे भी तो मनुष्य हैं, इश्वयार और सम्मान के भूखे हैं। उन्हें भी समाज में आम लोगों के साथ प्रतिस्पर्धा करनी है। उनके अंदर भी अपने माता–पिता, समाज व देश का नाम रोशन करने का सपना है। बस स्टॉप, सीढियों पर चढने–उतरने, पंक्तिबद्ध होते वक्त हमें यथासंभव उनकी सहायता करनी चाहिए।

आइए, एक ऐसा स्वच्छ माहौल तैयार करें, जहां उन्हें क्षणिक भी अनुभव ना हो कि उनके अंदर शारीरिक रूप से कुछ कमी भी है।

नारायण सेवा संस्थान परिवार की अपील है कि दिव्यांगों का मजाक न उड़ाएं, उन्हें सहयोग दें। साथ ही उनका जीवन स्तर उपर उठाने में संस्थान के प्रकल्पों में मदद भेजकर स्वयं सहयोगी बनें... एक उदाहरण पेश करें अपने परिवार में... समाज में.... संस्कारों से...।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

भावक्रांति आव्हान, प्रभु बोले– इसको मारकर प्रिये हम तुम्हारी इच्छा पूरी करते है।

उस कुरंग के पीछे प्रभु ने,
क्रीड़ापूर्वक किया प्रयाण।
समझ अंत में उसका छल,
जो छोड़े इधर प्रभु ने बाण।

और प्रभु ने एक बाण लगाया। ओ राम–लक्ष्मण, हे ! सीते, लक्ष्मण, सीते। और ये आवाज सुनकर के सीताजी ने कहा– हे ! लक्ष्मण तुरन्त जाओ। आपके भाई बहुत बड़ी विपत्ति में लगते हैं। आपके भाई पुकार रहे हैं। अभी– अभी तुमने सुना उन्होंने कहा–सीते, उन्होंने कहा– लक्ष्मण, उनके प्राण बचाओ। लक्ष्मणजी ने कहा– हे! माते जिनकी भृकुटि मात्र के संकेत से हजारों निहारिकाएं, हजारों सूर्य, चन्द्रमा प्रकट हो जाते हैं, भंग हो जाते हैं। प्रलय हो जाता है कभी सतयुग, कभी द्वापर, कभी त्रेता, कभी कलियुग का अंत हो जाता है। उन प्रभु को कौन कश्ट दे सकता है ? हे ! माते मुझे ऐसा लगता है, ये राक्षसों की माया है, ये उनका छल है, ये उनका कपट है, ये उनके शड़यंत्र है। मैं आपको छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा। प्रभु ने मुझे कहा– सावधान, लक्ष्मण तुम रक्षा करना सीताजी की। वो जब गये तो स्वर्ण मृग के पीछे। माता कोई स्वर्ण मृग होता है क्या ? मुझे तो शुरू से ही शंका लग रही है ? सोने का मृग तो आज दिन तक नहीं होता। वो सोने का मृग नहीं था, कोई राक्षस होगा, और आप अकेली रह जाओगी। इस जगंल में बहुत राक्षस है। आपने खर– दूषण को भी देखा है, त्रिशरा को भी देखा है। और लक्ष्मण ने बहुत कहा लेकिन सीताजी बोली– मेरा बांया अंग फड़कता है। कभी– कभी होता है ना–

होइहि सोइ जो, राम रचि राखा।
क्यों करि तर्क, बढ़ावै साखा।।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

एक वर्ष की चिकित्सा के बाद चला मोहित

बांका (बिहार) के गांव कर्मा निवासी राजीव कुमार सिंह के घर 26 जुलाई 2018 को दूसरी संतान का जन्म शल्य चिकित्सा से हुआ। जन्म के 6–7 माह बाद माता–पिता को पता लगा कि मोहित के दोनों पांवों में कमजोरी और टेढ़ापन है। यह देख वे चिंताग्रस्त हो गए। तभी उनके किसी मित्र ने बताया कि अपने बच्चें का इलाज उन्होंने भी नारायण सेवा संस्थान में कराया जिससे वो अब आसानी से चलने लगा है। इस जानकारी के बाद मोहित के माता– पिता भी बिना वक्त गंवाए मार्च 2019 में उदयपुर आए।

संस्थान की डॉक्टर्स टीम ने जांच की। बच्चे को जन्मजात क्लब फुट डिफोरमेटी रोग बनाया और कहा कि 2 वर्ष तक इलाज चलेगा। फिर शुरू हुआ इलाज का दौर जिसके तहत 3 बार प्लास्टर चढ़ाया गया। दोनों पांव का एक–एक ऑपरेशन हुआ। उसके बाद 2 बार फिर प्लास्टर चढ़ाए और 3 बार अलग– अलग तरह के जूते पहनाकर उसे चलाया। मोहित के पांव अब सीधे हो गए है। वो दौड़ने भी लगा है। पूरा परिवार उसे चलता देख बहुत खुश है।

सम्पादकीय

अनेक शास्त्रज्ञों ने धर्म के विविध स्वरूप बताये हैं। भारतीय अध्यात्म जगत में धर्म की वृक्ष से अनेक प्रसंगों में तुलना की गई है। धर्म वृक्ष के विविध अंगों में कई अध्यात्मवेत्ताओं ने दया को धर्मरूपी वृक्ष की जड़ कहा है। दया का भाव ही मूल बताया गया है। जैसे वृक्ष को जीवित रखने, सुदृढ़ बनाये रखने तथा विस्तार देने के लिए जड़ का महत्व स्वतः सिद्ध है, वैसे ही धर्मरूपी वृक्ष के लिए दया का महत्व है। दया रूपी जड़ से धर्म रक्षित होता है। यह दया भाव मानव मात्र में पूर्णतया विद्यमान होता है। फिर भी हम पाते हैं कि कोई–कोई मनुष्य हो कभी–कभी निर्दयता का व्यवहार भी कर बैठता है। सचाई तो यह है कि वह अपने मूल स्वभाव को जब–जब विस्मृत कर बैठता है, तब–तब उससे निर्दयतापूर्ण कृत्य हो जाते हैं। अपने मूल स्वभाव को सही स्थिति में बनाये रखने के लिए ही दया का निरंतर अभ्यास बताया गया है। यह अभ्यास प्राणिमात्र की सेवा, उचित कार्य के लिये दान आदि से बना रह सकता है। हम अपने स्वभाव को दयामय यानी धर्ममय बनाये रखना चाहें तो सद्कार्य करते रहें।

कुछ काव्यमय

दिल में दया निवास हो, मन में हो संतोष।
समझो उसको मिल गया, कुबेर वाला कोष।।
दया धर्म का मूल है, बोले तुलसीदास।
धर्म भला कैसे तजें, जब तक है ये सांस।।
दया भाव से जो जिये, वो ही है इंसान।
मानव को ही है मिला, दया भाव वरदान।।
दीनों पर करते दया, वे ही बने रसूल।
हरि प्यारा बनना चहे, दया भाव मत भूल।।
दया मोक्ष का द्वार है, मुक्ति का है प्रयास।
दया भाव जिस घट बसे, वहीं है प्रभु प्रकाश।।

दौलत सेवा की

हर आँख यहाँ
यूं तो बहुत रोती है।
हर बूंद मगर
अश्क नहीं होती है।।
पर देखकर रो दे
जो जमाने का गम।
उस आँख से आँसू गिरे
वो मोती है।।

क्या नाम है बेटा आपका? कुछ देर चुप रहने के बाद दबी सी आवाज में बच्चे के होंठ हिले पर शब्द चबा लिए! प्रश्न पुनः उठा तो सहज कर बच्चे ने नाम बताया–छगन लाल! पिताजी का नाम? डालचन्द जी। गांव? ढाणी तहसील भदेसर जिला चितौड़गढ़। यह बात है उस दिन की जब यह बच्चा अपने पैरों पर चलने की इच्छा लेकर हॉस्पीटल में आया था। चारों हाथ –पैर से बच्चा पशुवत भी चलने में समर्थ न था। दोनों पैरों को समेट कर हाथों पर बैठ कर अपना जोर देकर आगे सरककर चलने की कोशिश करता था।.....

साथियों ने कहा, भाई सा, यह बच्चा यदि अपने पांवों से खड़ा हो जाये तो... ... डॉ. सा. ने जाँच कर 3 ऑपरेशन कर दिये। संस्थान के हॉस्पीटल में 23 दिन रहने के बाद घर भेजा प्लास्टर बांध कर।

घर जाने के बाद में 16 दिनों में यह सुखद सूचना मिली कि बच्चा अपने पांवों से चलने लग गया। प्रभु का साथ बराबर मिल रहा है तभी तो सभी प्रकल्प सफलतापूर्वक चल रहे हैं।

इस बच्चे की सुखद सूचना ने जो आनन्द दिया वह करोड़ों – की दौलत से भी बढ़कर है।

– कैलाश 'मानव'

क्रोध पर विजय

क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। क्रोध मनुष्यों के बीच वैमनस्य पैदा करता है। क्रोध पर विजय ही सबसे बड़ी जीत है।

बात उस समय की है जब अब्राहम लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति थे। उनके पास तत्कालीन रक्षा मंत्री आए और सेनाध्यक्ष की शिकायत करते हुए कहने लगे, "मैं इस सेनाध्यक्ष से बहुत परेशान हूँ। इनके काम करने का तरीका मुझे पसन्द नहीं है। इस वजह से मुझे बहुत क्रोध आ रहा है और मैं सेनाध्यक्ष को एक पत्र लिखने वाला हूँ।" रक्षा मंत्री की बात सुनकर अब्राहम लिंकन ने कहा, "जरूर लिखिए और उस पत्र में आप अपने मन की सारी भड़ास निकाल दीजिए।"

रक्षा मंत्री ने पत्र लिखा और पत्र लेकर पुनः अब्राहम लिंकन के पास पहुँचे।

अब्राहम लिंकन ने पत्र लिया और उसे तत्काल फाड़ दिया। यह देखकर रक्षा मंत्री ने पूछा, "आपने इसे क्यों फाड़ा?"

अब्राहम लिंकन ने जवाब दिया, "जब भी आपको गुस्सा आए तो उसे कागज पर लिख दो और उस कागज को फाड़ दो।" अर्थात् क्रोध को कभी भी अपने अन्दर मत रखिए। उसे कागज फाड़ने के माध्यम से बाहर निकाल दीजिए। इससे सामने वाले को कड़वे शब्द भी नहीं सुनने पड़ेंगे, आपसी झगड़ा भी नहीं होगा और आप क्रोध से शरीर पर होने वाले दुष्प्रभाव से भी बच जाएँगे।

– सेवक प्रशान्त भैया

बच्चों की प्रतिभा को पहचानकर उन्हें बढ़ाना चाहिए

स्वामी दयानंद सरस्वती के गुरु का नाम था स्वामी विरजानंदजी। वे भी बड़े तेजस्वी थे। एक दिन दयानंद अपने गुरु के पास पहुंचे और बोले, अब मेरी शिक्षा पूरी हो चुकी है, इसलिए मैं आपके लिए गुरु दक्षिणा लेकर आया हूं, वो आपको देना चाहता हूं।

गुरु ने कहा, दो मुझे, क्या लेकर आए हो मेरे लिए?

दयानंद ने कुछ लौंग अपनी मुट्ठी में रखी हुई थी। हाथ में लौंग दिखाते हुए दयानंद ने कहा, मैं ये लौंग आपके लिए लेकर आया हूं।

लौंग देखकर गुरु थोड़े क्रोधित हो गए। उन्होंने कहा, मैंने तुम्हें जो शिक्षा दी है, उसका ये मोल है? थोड़ी सी लौंग लेकर आए हो।

दयानंद ने विनम्रता से कहा, मैं एक संन्यासी हूं। मेरे पास कुछ है नहीं। मुझे भिक्षा में जो मिला है, वही दे सकता हूं।

तब गुरु विरजानंद ने कहा, दयानंद गुरु दक्षिणा तो मैं जरूर लूंगा और वही लूंगा जो तुम्हारे पास है। मैंने तुम्हारी आंखों में मनुष्यता के लिए दया देखी है। और ये भी देखा है कि जो पाखंड और कुप्रथाएं इस समय समाज में चल रही हैं, उन्हें मिटाने के लिए तुम जन जागृति कर सकते हो। ये प्रतिभा मैंने तुम में देखी है। तुम दोहरा जीवन नहीं जीते हो। तुम जो सोचते हो, वही बोलते हो। मुझे तुमसे यही चाहिए कि तुम लोकहित में इन कुप्रथाओं का समापन करो।

इसके बाद दयानंद सरस्वती ने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेते हुए लोकहित में कई कुप्रथाओं को समाप्त किया।

जो गुरु समर्थ हैं, वे अपने शिष्यों की योग्यता और स्वभाव को अच्छी तरह जानते हैं। माता–पिता भी अपने बच्चों के पहले गुरु होते हैं। माता–पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों की प्रतिभा को परखें और उन्हें उसी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करें। शिष्य को उसकी प्रतिभा के अनुसार लोकहित में काम करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

कैलाश का एक अन्य मित्र राधाकृष्ण सोनी भी वहीं था। उसने जूनियर काउन्ट्स ऑफिसर परीक्षा का एक भाग पास कर रखा था, दूसरा पास करना था। कैलाश ने भी इस परीक्षा का एक भाग पास कर रखा था। सोनी ने प्रस्ताव रखा कि दोनों मिलकर इस परीक्षा की तैयारी करते हैं मगर कैलाश ने मना कर दिया। उसे इन्सपेक्टर के कार्य में मजा आ रहा था, जगह–जगह जाने को मिलता था, नये नये लोग मिलते थे और जीवन के अत्यन्त कारूणिक और दारूण अनुभवों से आत्मसात होने का अवसर मिलता था। दौरों के कारण जो डी.ए. मिलता था इसलिये कैलाश ने साफ कह दिया कि अभी दो सालों तक तो वह आई.पी.ओ. ही रहना चाहता है।

कैलाश की बात सुन कर सोनी ने कहा कि परीक्षा में कुल 7 पेपर होते हैं, अभी 6 पेपर दे दो, सातवां पेपर कभी भी दे सकते हो। 6 पेपर पास कर दो साल तक आई.पी.ओ. के मजे लेते रहो, दो साल बाद सातवां पेपर दे देना और जे. ए.ओ. बन जाना। सानी की यह बात कैलाश को जंच गई, वैसे भी वह खाली ही था। परीक्षा अगले माह ही थी। अब दोनों मिलकर परीक्षा की तैयारी करने लगे। सातवें पेपर की किताबें भी उनके पास ही थी मगर वे इसे छूते भी नहीं थे। कैलाश पूरी कोशिश करता था कि सातवें पेपर की किताबों की तरफ देखे भी नहीं, उसने तो सोनी को यहां तक कह दिया था कि इन किताबों को यहां से हटा दो। ऐसे संकल्प के बावजूद जब सभी छः पेपरों की पढ़ाई पूरी हो जाती तो सातवें पेपर की किताबें उसे ललचाती। वह जी कड़ कर उनकी तरफ से ध्यान हटाने की कोशिश करता मगर फिसल ही जाता और ये किताबें उठा कर उलटने–पलटने, इस प्रक्रिया में कब वह ये किताबें पढ़ने लगता उसे पता ही नहीं चलता।

दोनों ने 6 पेपर खुशी खुशी दे दिये। सातवें पेपर की भी परीक्षा होने वाली थी, कैलाश को अब लगने लगा कि सातवें पेपर की परीक्षा देने में भी हानि क्या है, तैयारी है नहीं, फेल तो होना ही है, दो साल बाद वापस दे देंगे। ऐसे विचारों के बावजूद वह अपना मन कड़ा कर रहा था कि परीक्षा नहीं दे मगर जैसे कोई अदृश्य शक्ति उसे खींच कर ले जा रही थी, वह परीक्षा देने पहुंच गया। पेपर आया, दस मिनट तक तो उसने अपना पेन ही नहीं खोला, फिर धीरे धीरे कुछ लिखने लगा। पेपर 100 अंकों का था, उत्तीर्ण होने के लिये न्यूनतम 40 अंक लाना अनिवार्य था। उसने 30 अंकों के ही प्रश्नों के उत्तर दिये ताकि यह निश्चित हो जाये कि वह उत्तीर्ण नहीं हो, पौन घन्टे में ही वह अपनी कॉपी कर परीक्षा भवन से बाहर आ गया। वह प्रसन्न था, पेपर सरल ही था, उसने पूरे उत्तर नहीं दिये थे इसलिये पास होने का सवाल ही नहीं था। इसी बहाने आई.पी.ओ. की नौकरी 2–3 साल और चल जायगी।

अंश - 067

सिंथेटिक फूड कलर हैं हानिकारक

त्योहारों का सीजन आते ही मार्केट में मिठाइयों की बहुतायत में बिक्री होती है। ये दिखने में इतनी रंग–बिरंगी होती हैं कि इन्हें देखते ही मुंह में पानी आने लगता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि इनमें सिंथेटिक रंगों की मिलावट भी हो सकती है। एफएसएसएआई ने सिंथेटिक रंग की मात्रा तय कर रखी है। 100 पीपीएम यानी 100 किलो मिठाई में केवल एक ग्राम या इससे भी कम प्रयोग होने के नियम है। निर्माता इससे अधिक प्रयोग करते हैं तो यह शरीर को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

डार्क कलर से झांसा

ऐसा जरूरी नहीं मिठाई उसके नाम के अनुरूप दिखे। जैसे केसर बर्फी का गहरा केसरी रंग उसमें केसर के कारण नहीं बल्कि गहरे सिंथेटिक फूड कलर के कारण होता है। इसी प्रकार पाइनेपल या चॉकलेट नहीं होता। ये फूड कलर व फ्लेवर से बनती हैं।

हो सकती हैं एलर्जी

अप्रुव्ड फूड कलर भी सिंथेटिक हैं जैसे लाल (इरिथोसिन, कारमोसिन), पीला (सनसेट येलो, टारटाजीन), हरा (फास्ट ग्रीन एफसीएफ)। ये ऐजो, इंडिगोइड केमिकल प्रकृति के हैं। अधिक प्रयोग से एलर्जी व अन्य रोगों की आशंका रहती है। इसमें अचानक चेहरे, होंठ व आंखों में सूजन, लालिमा, त्वचा पर लाल रंग के चकत्ते हो जाते हैं। बच्चों में चिड़चिड़ापन मुख्य है। सावधानी से मिठाई खाएं।

सीधा हुआ सोनू का टेढ़ा पैर

धामपुर (बिजनौर) उत्तरप्रदेश निवासी अब्दुल वाहिद का पुत्र जन्म से ही पोलियोग्रस्त पैदा हुआ। जीवन के 17 वर्षों में उसे पिता ने कई हॉस्पीटल में दिखाया पर कहीं भी पोलियो रोग की दिव्यांगता में राहत नहीं मिली। परेशान परिवार सोनू की तकलीफ देखकर बहुत दुःखी होता था पर जन्मजात बीमारी के आगे वे लाचार थे। एक दिन टेलीविजन पर नारायण सेवा संस्थान की दिव्यांगता ऑपरेशन सेवा के बारे में देखा तो बिना समय गंवाये वो संस्थान में उदयपुर पहुंच गए। डॉ.ओ.पी. माथुर ने जांच करके दांये पांव का ऑपरेशन कर दिया जिससे उन्हें बड़ा फर्क नजर आया। दूसरे पांव के ऑपरेशन के लिए संस्थान में पुनः आए। सफल ऑपरेशन के पश्चात् सोनू पूर्ण–स्वस्थ है। उन्हें भरोसा है कि वह शीघ्र ही पोलियो की दिव्यांगता को मात देकर अपने पैरों पर चलर गांव पहुंचेगा।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

जय श्रीराम! आज दिनांक 27 अप्रेल 2020 को भगवान कृपा करवा रहा हैं। दिनों दिन कृपा करवा रहा हैं। पारसमल जी गुलाब चन्द जैन साहब, ताम्रम, मद्रास, (चैन्नई) प्रकाश जी जैन साहब, व द्वितीय नम्बर के सुपुत्र, आदरणीय पी. जी. जैन साहब की पुत्रवधु, प्रकाश जी ताम्रम वालों की धर्म पत्नी, परम आदरणीय प्रेमलता जी, बहुत आभारी हूँ, परमपूज्य आनन्द ऋषि जी महाराज का। जैन श्रमण संघ के बहुत बड़े महाराज साहब। जिनके शिष्य रूप में आचार्य सम्राट देवेन्द्र मुनि जी महाराज ने चादर ओढ़ी थी। सबसे पहले चादर आनन्द ऋषि जी महाराज जो अहमदनगर में और भी समाजसेवी महापुरुष सब विराजते हैं, तो उनकी तस्वीर प्रकाश भैया ने बडे रूम में लगा रखी थी। जब भी घर में प्रवेश करते थे, तस्वीर को प्रणाम करते थे, आनन्द ऋषि जी महाराज को प्रणाम करते थे। नमन करते थे, नवकार मंत्र बोलते थे :–

णमो अरिहंताणं,
णमो सिद्धाणं,
णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं,
णमो लोए सव्व साहूणं,
एसो पंच ण्मोक्कारो, सव्व
पावपणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवई मंगलं।।

परमपिता परमेश्वर की कृपा। परमपूज्य सुखलाल जी पोखरणा साहब हमें अंतरिक्ष से आशीर्वाद दे रहें हैं। वो पधारे, वो रिश्ते में परमपूज्य पी. जी. जैन साहब के भाणेज लगते हैं। पी. जी. जैन साहब उनको बहुत आदर देते थे सुखलाल जी पोखरणा साहब पधारे। पी. जी. जैन साहब ने कहा– देखो भाई सुखलाल, थांरा पैसों ने भाग्यवान बनाना है मने, ऐसे आदिवासी बेचारे जो घर पर माता–पिता पर बोझ बन गये हैं।

माता–पिता जी की मृत्यु हो गई। जब माता–पिता थे, तब तक मांस मदिरा लेते थे, जानवरों को मार डाला, किसी को पकड कर मार डाला, दारू, कच्ची महुए की शराब, घर में भट्टियाँ लगा ली, महुआ खूब मिलता है, उसे सड़ाकर शराब बना ली। नशे के लिए पी गये, ऐसा जीवन। पढाई कभी की नहीं, स्नान दो चार महीने में एक बार, व कभी कभी किया, कभी किया नही, उसी तालाब में नहाते हैं, उसी जल को पिया, ऐसे बच्चों को संस्था में रखा है, जो अनाथ है, अहसाय हैं।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 419 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com•आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023